IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' की आत्मकथा में यथार्थवाद

रमाषंकर षर्मा
षोधार्थी– एम.ए.(हिन्दी) नेट
षासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना

शोध सार

आत्मकथा में लेखक अपना जीवन समसामयिक जीवन और उसकी जीवन प्रक्रिया के क्रम में मानसिक संरचना का बोध कराता है। आत्मकथा के लिए खोया हुआ मन, साहस, संयम अति आवष्यक है। आत्मकथा में प्रामाणिकता, विष्वसनीयता, तटस्थता, आत्मनिरीक्षण, सच्चा मानसिक संघर्ष, गुण–दोषों का उद्घाटन अपेक्षित है।

बच्चन अपनी आत्मकथा में स्वाभाविक रूप में चित्रित हैं। उन्होंने अपनी आत्मकथा बताते हुए उसमें निष्छल आत्मीयता से पाठकों को विष्वस्त सहभागी बनाया है। बच्चन ने अपने आत्मकथा को नये–नये आभूषणों से सजाया है। उसमें परम्पराओं, आस्थाओं का खुला चित्रण किया है। स्वयं माटी की महक से सुवासित किया है। अवचेतन के स्तर से इतना कुछ सामूहिक और जातीय चित्रण करते हुए भी यह आत्म–चित्रणकार स्वयं व्यक्ति के अस्तित्व को उभारकर साफ सामने रखता है।

मुख्य बिन्दु– समसामयिक, साहस, तटस्थता, आत्मनिरीक्षण, निष्छल, विष्वस्त, आस्थाओं, अवचेतन!

शोध प्रपत्र

हिन्दी साहित्य के दैदीप्यमान आत्मकथाकार डॉ. हरिवंषराय **'बच्चन'** जी ने अपने जीवन चरित को 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ में', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर', एवं 'दषद्वार से सोपान तक' में बच्चन जी ने यथार्थ चित्रण किया **है।**

क्या भूलूँ क्या याद करूँ में उन्होंने अपने जन्म से लेकर अपनी पत्नी श्यामा की असाध्य बीमारी तक के अनुभवों का यथार्थ चित्रण किया है।

नीड़ का निर्माण फिर में बच्चन जी के युवाकाल के आरम्भिक कठोर संघर्ष के उपरान्त जीवन एवं साहित्य में स्वयं को पुनः स्थापित करने की कहानी का वर्णन है।

बसेरे से दूर में उन्होंने अपनी जीवन की उस अवधि को प्रस्तुत किया है। जब बच्चन जी ने अपने देष नगर, घर, परिवार से दूर रहकर केम्ब्रिज में कवि ईट्स पर शोध कर पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

दषद्वार से सोपान तक में अपने बच्चों की उन्नति, विदेष यात्राओं का यथार्थमयी चित्रण किया है।

''बच्चन जी की आत्मकथा में यह सभी मुख्यतः विद्यमान है। हिन्दी साहित्य में आत्मचरित्र बहुत कम लिखे गये हैं।''

आत्मकथा के प्रथम भाग क्या भूलूँ क्या याद करूँ में कायस्थ जाति की उत्पत्ति और अपनी सात पीढ़ियों के इतिहास से लेकर अपने बचपन, षिक्षा, प्रारम्भिक जीवन संघर्ष, समकालीन राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक वातावरण का अत्यन्त सजीव एवं यथार्थ वर्णन बच्चन जी ने किया है। इस भाग में उन्होंने 1936 तक का अपना अनुभव वयॉ किया है। तथा अपने जीवन के उतार–चढ़ाव व संघर्ष को बताया है।

कायस्थ ब्राह्मण नहीं हैं, वह क्षत्रिय नहीं हैं, वैष्य नहीं हैं, वह शूद्र भी नहीं हैं, यो ब्राह्मण उसे शूद्रवत् मानते रहे हैं। बच्चन जी मानते हैं। कायस्थ ब्राह्मण के समान ब्रह्मा के मुख से नहीं निकला, न क्षत्रिय के समान बाहु से, न वैष्य के समान उदर से और न शूद्र के समान चरण से वह कायस्थ था। पूरी काया से था और काया से काया के रूप में निकलने का तो एक ही स्वाभाविक स्थान है।

ब्राह्मण लोग कायस्थ को शूद्र समझते थे। और कायस्थ के वाक्चातुर्य और बुद्धि कौषल के भी किस्से कहे जाते हैं।

बच्चन जी लिखते हैं–

''हमारे एक–एक अध्यापक पंडित कहा करते थे कि– **''कायस्थ की मुई खोपड़ी भी बोलती है।''** उन्हीं से मैने सुना था, कि एक बार किसी ने देवी की बड़ी आराधना की देवी ने प्रसन्न होकर वरदान देने को कहा। इधर मॉ अन्धी, पत्नी की कोख सूनी, घर में गरीबी तथा वरदान मॉगें जब सोच–सोचकर हार गया तो एक कायस्थ महोदय के पास पहुँचा। उन्होंने कहा इसमें परेषान होने की क्या बात है, तुम कहो कि मैं यह मॉगता हूँ कि मेरी मॉ अपने पोते को रोज सोने की कटोरी में दूध भात खाते देखे।''

इस प्रकार बच्चन जी स्वयं स्मरण करते हैं। कि पुराण, इतिहास, लोक कथाओं और लोकोक्तियों में जिनको इस रूप में चित्रित किया गया है। मैं उसी का वंषधर हूँ। बच्चन जी जिस परिवार के कहे

जाते हैं। वह भी लगभग उसी समय अमोढ़ा से निकला, जिस समय अन्य कायस्थों के परिवार वहॉ से निकले। अमोढ़ा से निकलकर प्रतापगढ़ में दो–तीन पीढ़ियों तक रह चुकने के बाद इलाहाबाद आ गये।

बच्चन जी ने अपनी आत्मकथाओं में अपने पूरे परिवार, समाज एवं जाति का खुला चित्रण किया है।

'नीड़ का निर्माण फिर' आत्मकथा का यह दूसरा भाग युवाकाल के आरंभिक कठोर संघर्ष के बाद जीवन तथा साहित्य में स्वयं को पुनः स्थापित करने के प्रयत्नों की रोमांचक कहानी हैं। साथ ही कवि और उसकी काव्य संसार की जीवन यात्रा भी।

नीड़ का निर्माण फिर की शुरूआत सन् 1936 से होती है। इसमें श्यामा की मृत्यु से क्षुब्ध हुए लेखक का चित्रण है। इसमें श्यामा के मुख–दहन, दाह–क्रिया का दिल दहलाने वाला दारूण दस्तावेज है।

आत्मकथा के इस भाग में बच्चन जी के युवाकाल के आरम्भिक कठोर संघर्ष के उपरान्त जीवन एवं साहित्य में स्वयं को पुनः स्थापित करने की कहानी है।

''ष्यामा के स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार दिखाई दे रहा था। 17 नवम्बर की शाम श्यामा पर झपटी, वह शाम मृत्यु की अखण्ड रात में बदल जाने वाली थी। श्यामा अपने नाम के अनुरूप रूप में या अरूण में विलीन होने लगी। शाम को अचानक बेहोषी का एक दौरा आया। उसके दॉत बैठ गए, ऑखें डूब गई और तब से मध्य रात्रि तक वह केवल सॉसों के ऋण की अन्तिम किस्त चुकाती रही।''

दौरा आने पर डॉ. घोष को बुलाया गया, उन्होंने श्यामा की नाड़ी देखी और लेखक से कहा,

''मरीज को शान्त पड़ा रहने दो और तुम भी अपने मन को शान्त रखो।''

लेखक लिखते हैं– घर पर मौत की छाया मड़राने लगी थी और हमारा छोटा–सा परिवार श्यामा की चारपाई को घेरकर बैठ गया था। सिर लटकाए सर्वथा असमर्थ पूर्णतया पराजित। **मृत्यु की प्रतीक्षा मृत्यु से अधिक डरावनी होती है।** बीच में श्यामा की उर्द्धष्वास कुछ अस्पष्ट सा कहती। कुछ अस्फुट कहते कुछ प्रयास करते ही श्यामा की सांस की डोर अचानक टूट गई। लेखन ने अपनी मनः स्थिति को इस प्रकार व्यक्त किया है–

''साथी सो न, कर कुछ बात,

बात करते सो गया तू।

स्वप्न में फिर, खो गया तू,

रह गया मैं और आधी रात, आधी रात''

श्यामा का दम टूटते ही लेखक की मॉ, बहन, छोटा भाई और उसकी पत्नी सब एक साथ रो पड़े। केवल पथराई ऑखों से बच्चन जी शव को देखते रहे, ना उनके मुँह से आह निकली, ना ही ऑख से ऑसू, लेखक के पिता जी ने श्यामा को धरती देने को कहा। तो यह बात लेखक के मन को नहीं रुचि। उनके पिता जी ने मनः स्थिति को समझते हुए गीता का पाठ किया। उस रात का उत्तरार्द्ध बड़ा लम्बा हो गया। इस प्रकार लेखक ने श्यामा के प्रथम मिलन से लेकर उसके अंतिम विदा के दिन को दुबारा जिया, नौ वर्षो का समय ऑखों के सामने साकार हो गया।

इस प्रकार बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा में यथार्थ व बेवाक तरीके से वर्णन किया है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. रामचन्द्र तिवारी– हिन्दी का गद्य साहित्य, संस्करण–1968, पृष्ठ– 195।
2. डॉ. हरिवंशराय बच्चन– क्या भूलूँ क्या याद करूँ, पृष्ठभूमि का।
3. डॉ. हरिवंषराय बच्चन– नीड़ का निर्माण फिर, पृष्ठ –165।
4. डॉ. हरिवंषराय बच्चन– नीड़ का निर्माण फिर, पृष्ठ –22।